गोलालारीय समाज का मुखपत्र

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/ICD/1252/2015-2017 सेवा में,

मासिक गोलालारीय

दर्शन

अपनों के साथ अपनी बातें

golalariya_darshan@yahoo.in
गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है –
www.golalariya.com

लेट पोस्टिंग

जो भरा नहीं हैं भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं। हृदय नहीं पत्थर हैं वो, जिसे समाज से प्यार नहीं।

वर्ष : 7 अंक : 2 पृष्ठ संख्या : 8 माह – 16 सितम्बर 2015 सहयोग राशी – आजीवन सदस्य बनें ।

सल्लेखना या संथारा आत्महत्या नहीं आत्मसाधना है ।

अभी हाल ही में किसी जीव द्वारा संलेखना या संथारा जो कि जैनियों की साधना का चरमोत्कर्ष है, साधना का लक्ष्य है, फल है को आत्महत्या सिद्ध करके हाइकोर्ट में केस जीता है । यहाँ तक कि संथारा या संलेखना को सती प्रथा के समान कहकर उसे कुप्रथा कहा गया है। तो आईये हम पहले समझे प्रथा या कुप्रथा क्या होती है । जब समाज में किसी परिस्थितिवश किसी क्रिया को आरम्भ किया जाता है और उस क्रिया को समाज के गणमान्य व्यक्तियों द्वारा उस परिस्थिति विशेष में उसे स्वीकृति प्रदान की जाती है तो धीरे धीरे वह प्रथा (बहुत समय तक चलते रहने के कारण) का रुप ले लेती है । किन्तु आगे चलकर उस परिस्थिति विशेष के समाप्त होने पर जब उस क्रिया का कोई औचित्य नहीं रह जाता उस क्रिया से नुकसान होने लग जाये तो वह कुप्रथा कहलाती है । ऐसे में प्रबुद्धजनों द्वारा उसको खत्म करने का प्रयास किया जाता है और खत्म किया जाना चाहिये । जैसे सती प्रथा, दहेज प्रथा आदि। सती प्रथा का आरम्भ एक परिस्थिति विशेष में हुआ था जब मुगलो द्वारा मराठाओं पर आक्रमण कर उनकी स्त्रियों से दुराचार करने का प्रयत्न किया गया तो उन्होंने अपनी अस्मिता को बचाने के लिए अग्नि में कूदकर अपने प्राणों की बलि देना उचित समझा क्योंकि उस समय अपनी अस्मिता को बचाने का उनके पास कोई दूसरा उपाय नहीं सूझता था । और इस प्रथा को मराठा समाज के गणमान्य और सामान्य सभी समाजजनों के द्वारा मान्यता दे दी गयी। और धीरे धीरे जब बहुत समय तक ऐसी परिस्थिति बनी रही और औरतों द्वारा उनके पति के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हो जाने पर अग्नि में कूद जाने की क्रिया चलती रही तो उसने एक प्रथा का रूप ले लिया। किन्तु आगे चलकर अंग्रेजों के समय राजा राममोहन राय जो कि एक समाज सेवी थे ने इसके दुष्प्रभावों को समझा और उसे कुप्रथा घोषित कर इसे पूर्णत: खत्म करने का बीड़ा उठाया और खत्म भी किया जो कि उचित ही था । तो ऐसे जन्म लेती है प्रथा या कुप्रथा । किन्तु संलेखना या संथारा कोई परिस्थिति वश आरम्भ की हुयी कोई क्रिया नहीं है अपितु अनादि काल से संतजनों द्वारा जीवन भर की गयी अपनी साधना के फल को पाने के लिये धारण किया गया संयम है। जिस प्रकार संसार शरीर और भोगों की नश्वरता को जानकर वैराग्य धारण कर अपने आत्मस्वरूप को पाने का प्रयास किया जाता है (जो कि अविनश्वर है)। उसी प्रकार मृत्यु के सत्य को पहचानकर कि मृत्यु या मरण कुछ और नहीं अपितु वस्त्र के समान एक शरीर को त्याग कर दूसरे शरीर को धारण करना है और ऐसा निश्चय हो जाने पर जिस प्रकार वस्त्र के जीर्ण शीर्ण हो जाने पर उसके प्रति ममत्व को त्याग कर हम उसका रखरखाव व देखभाल बंद कर देते है और अंत में उसका त्याग कर नया वस्त्र धारण कर लेते है बस यही प्रक्रिया हम अपने शरीर के साथ अपनाते है । जब तह यह स्वस्थ है काम करने योग्य है तब तक तो हम उसका पोषण करते है, रखरखाव करते है, भोजन पानी देते है किन्तु जब वह पूर्णत: जीर्ण शीर्ण हो जाता है तो उसके प्रति ममत्व को त्याग कर उसका रखरखाव बंद करके अपनी आत्मा जो कि अविनश्वर है, शाश्वत है की ओर अपनी दृष्टि कर लेते है। इस भावना में न तो शरीर को खत्म करने की भावना है और न ही उससे छुटकारा पाने की। अपितु जब तक वह हमारे साथ है तब तक धीरे धीरे उसकी आवश्यकता के अनुरूप ही उसे भोजन पानी देते रहते है । किन्तु बहुत अधिक जीर्ण शीर्ण हो जाने पर शरीर स्वयं भोजन पानी आदि ग्रहण करना बंद कर देता है । यदि हम जबरदस्ती उसे भोजन पानी आदि देते है तो अजीर्ण हो जाता है कई अन्य रोगों के होने की संभावना भी हो जाती है एवं मरण तक होने की संभावना भी रहती है। इसीलिये डाक्टर के निर्देश पर मरणासन्न व्यक्ति का आहार, पानी आदि धीरे धीरे कम या बंद कर दिया जाता है अंत में उसे ग्लूकोज़ फिर दवाईयों आदि पर ही उसे रखा जाता है। तो क्या इसे हम डाक्टर के निर्देश में की गयी आत्महत्या कह सकते है ? क्या अंत समय में जब शरीर स्वयं ही भोजन, पानी आदि ग्रहण नहीं कर रहा है ऐसी परिस्थिति होने पर भी उसे भोजन, पानी आदि देते रहना जीवन है ? अगर इसका नाम जीवन है तो भोजन पानी आदि देते रहने पर भी व्यक्ति का मरण क्यो हो जाता है ? और ग्रहण कर सकने में समर्थ न होने पर भी उसे भोजन पानी आदि देते रहने से मरण हो जाये तो क्या ये आत्महत्या नहीं कहलायेगी ? निश्चित कहलायेगी यदि जिसने इस प्रक्रिया को समझ लिया प्रकृति के इस सत्य को समझ लिया और समझदारी दिखाकर समय रहते शरीर का पोषण बंद कर दिया तो वह शरीर को तो छोड़ता है किन्तु मरण के दु:ख या वेदना को प्राप्त नहीं होता । एक समय के बाद शरीर तो छूटना ही है । यह हमारे हाथ में है कि हम उसे वेदना के साथ, दु:ख के साथ, पीड़ा के साथ, हाय हाय करते हुए छोड़े या हर्ष के साथ, समझदारी के साथ उसका साक्षात्कार करते हुए उत्साहपूर्वक पुराने कपड़े छोड़ने में समान छोड़े ।

बस यही स्वाभाविक प्रक्रिया ही अपनायी जाती है संलेखना में । जिसे धारण करना हर किसी के बस की बात नहीं है । जन्म महोत्सव तो सभी मनाते है पर मृत्यु को महोत्सव के रुप में बिरले ही मना पाते है । यह वही कर सकता है जिसने

शेष पृष्ठ 6 पर....

गोलालारीय दर्शन समाज के 4600 परिवारों तक नियमित भेजा जा रहा है। हमारे द्वारा पूर्व में भेजे गये पतों पर ही पत्रिका नियमित रूप से भेजी जा रही है ।
संभव है डाक व्यवस्था या आपका पता सही न होने के कारण पत्रिका आपको व आपके रिश्तेदारों तक पत्रिका नहीं पहुंचती है तो उनका नाम व पता पोस्टकार्ड पर लिखकर पत्रिका कार्यालय पर भेज देवें ।
संपर्क करे – 9407453066 पर दोप. 4 से रात्रि 10 तक संपर्क कर सकते है या अपना पता हमें वाट्स एप्प या एसएमएस कर सकते है ।

परामर्श प्रमुख

श्री कैलाशचंदजी जैन, झाँसी
श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन, अहमदाबाद
डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत, 9837043221
डॉ. कपूरचंद जैन, खतौली, 9412678258

प्रधान संपादक
सिंघई राजेन्द्र जैन, 9407453066

सह संपादिका
श्रीमती अर्चना अजय जैन, 9827798013
श्रीमती अनुपमा रजनीश जैन, 9009066884

कोषाध्यक्ष –
सुरेश कुमार जैन, 9827254111

प्रबंध संपादक
राजेन्द्र कुमार जैन, सायकलवाले, 9425353972
खुशालचन्द जैन, 9302123679
कोमलचंद जैन, 9329524227
(संयोजक एवं प्रकाशक)
बाहुबली जैन, 9827247647

शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक अपना संक्षिप्त परिचय सपत्नीक फोटो सहित एवं संरक्षक तथा विशेष सहयोगी सदस्य अपना संक्षिप्त परिचय फोटो सहित भेजे ताकि प्रकाशन किया जा सके।

*** संरक्षक ***
सीए अभयकुमार जैन, विदिशा

*** विशेष सहयोगी ***
मुन्नालाल जैन, ललितपुर
ए.एल. फणीश, विदिशा, संतोष जैन, विदिशा

*** आजीवन सदस्य ***
सुबोध भंडारी, भोपाल
राकेश जैन, सुरेन्द्र जैन, वीरेन्द्र जैन,
जिनेन्द्र जैन, जिनेश्वर जैन, वीरेन्द्र जैन, विदिशा
प्रवीणकुमार जैन, उज्जैन, अशोक जैन, मणिनगर

सदस्यता शुल्क

शिरोमणि संरक्षक (अ.जा.)	21000/-
परम संरक्षक (अ.जा.)	11000/-
संरक्षक (अ.जा.)	5100/-
विशेष सहयोगी (अ.जा.)	2100/-
आजीवन शुल्क (अ.जा.)	1100/-
सहयोग राशि	500/-

आप 'गोलालारीय दर्शन' के बैंक खाते में सहयोग राशि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के खाता क्र. 63048875855 IFSC Code: SBIN0030134 में चेक द्वारा ही जमा कर रसीद की फोटोकॉपी व अपना नवीन फोटो मय जानकारी के हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड व कार्यालय पते पर अवश्य भेजें ताकि आपको रसीद भेज कर आपका विवरण प्रकाशित किया जा सके।
नोट – 8 मार्च 2014 से अन्य शहरों से जमा की जाने वाली राशी पर बैंक शुल्क न्यूनतम 50 रु. कर दिया है।

अतः बायोडाटा शुल्क मल्टीसिटी चेक के द्वारा ही पत्रिका के पते पर भेजे।

विज्ञापन शुल्क (B&W)

अंतिम पेज	6000/-
फुल पेज (अंदर)	5000/-
1/2 पेज	3000/-
1/4 पेज	1600/-
मांगलिक बधाई फोटो सहित	2000/-
शोक संदेश फोटो सहित	1000/-
बॉयोडाटा फोटो सहित	200/-

बायोडाटा, समाचार व अन्य कोई जानकारी पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु गोलालारीय दर्शन द्वारा श्री राजेन्द्रकुमार जैन, हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड या पत्रिका कार्यालय इन्दौर पर भे

इन्दौर समाज की साधारण सभा संपन्न

राजेन्द्रकुमार जैन टेलीफोन, इन्दौर। श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास की 14वीं साधारण सभा गत वर्ष के आर्थिक प्रतिवेदन की प्रस्तुति एवं आगामी वर्षों में न्यास द्वारा किये जाने वाले विकास कार्यों की योजना को मूर्तरूप देने की चर्चा के साथ साआनंद संपन्न हुई।

मंगलाचरण पश्चात गत वर्ष की साधारण सभा का वाचन सचिव श्री बाहुबली जैन ने किया। आर्थिक प्रतिवेदन का पाठन स्थायी न्यासी श्री खुशालचंद जैन ने किया। अध्यक्ष श्री कोमलचंद ने आगामी वर्षों में किये जाने वाले कार्यों का विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत करते हुए बताया कि समाज का आगामी स्नेह सम्मेलन वर्ष के अंत तक आयोजित करने की योजना है जिसमें देशभर के विद्वानों, उच्च पदों पर आसीन / सेवानिवृत व समाज के श्रेष्ठीजनों को आमंत्रित कर सम्मनित करने की योजना है। समाज द्वारा क्रय की गई मंदिरजी एवं बहुउपयोगी एक बीघा भूमि पर शीघ्र ही भूमि शुद्धि की योजना पर कार्य चल रहा है। इस योजना के लिए कमेटी का गठन किया गया है। न्यू देवास रोड स्थित मंदिरजी की व्यवस्था हेतु न्यासी श्री कमलचंद जैन एवं श्री हीरालाल फणीश को स्थानीय समाज के साथ संचालन का भार सौंपा गया है। गोलालारीय दर्शन की संतोषजनक प्रगति पर सदस्यों द्वारा हर्ष व्यक्त करते हुए यह निर्णय लिया गया कि स्थायी कोष के निर्माण हेतु समाज सदस्यों को आजीवन सदस्य बनाया जाये। न्यास एवं गोलालारीय दर्शन के संयुक्त तत्वावधान में आगामी 29 नवम्बर को सिद्धक्षेत्र पवाजी में अखिल भारतीय दिगम्बर जैन विवाह योग्य प्रत्याशियों की पुस्तिका का विमोचन किया जाना है, जिसके पोस्टर एवं प्रविष्टि फार्म देशभर में भेजे जा चुके है जिसे स्थानीय प्रतिनिधियों की सहायता से मंदिरजी में लगाया गया है।

समाज की पारिवारिक निर्देशिका का कार्य अंतिम दौर में चल रहा है, जिन सदस्यों ने फार्म जमा नहीं कराये है वे क्षमावाणी कार्यक्रम में अपने फार्म अनिवार्य रूप से जमा करा देवें। निर्देशिका में इन्दौर नगर के साथ मालवा एवं निमाड़ क्षेत्र के परिवारों की जानकारियां भी प्रकाशित की जाना है।

समाज द्वारा उठावना संदेशो का प्रकाशन नईदुनिया एवं दैनिक भास्कर में किया जावेगा। जिन परिवारों द्वारा समाज लाग नियमित नहीं भरा जा रहा है वे इस सुविधा से वंचित रहेंगे। न्यास के संस्थापक कोषाध्यक्ष एवं गोलालारीय दर्शन के सम्पादक श्री राजेन्द्र जैन 'बागो' को समाज के प्रति समर्पण व लगन की भावना का सम्मान करते हुए न्यास द्वारा उन्हें आजीवन स्थायी न्यासी के रुप में मनोनीत किया गया है। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी समाज की सामूहिक क्षमावाणी, प्रतिभाशाली विद्यार्थी एवं तपसाधना करने वाले सदस्यों का सम्मान 4 अक्टूबर 2015, रविवार को न्यास भवन पर आयोजित किया जावेगा। सभा के समापन पर शांति पाठ का वाचन कर आभार उपाध्यक्ष श्री अशोककुमार जैन ने व्यक्त किया।

संगठन में ही शक्ति है।

यह मुहावरा हम वर्षो से सुनते आ रहे है परन्तु इसका प्रत्यक्ष उदाहरण गत 24 अगस्त को हम सभी ने देखा है। अनेक पंथों में बटी जैन समाज को मुनि प्रमाणसागरजी महाराज ने एकजुटता का पाठ पढ़ाते हुए जैन बंधुओं को उनकी शक्ति का आभास कराया। राजस्थान हाईकोर्ट से संलेखना परम्परा पर रोक लगाने के निर्णय को जैन समाज ने धर्म में अनावश्यक हस्तक्षेप मानते हुए विरोध किया। हर शहर व पंथ के समाजजन अपने अपने तरीके से विरोध कर रहे थे। सोशल मीडिया के द्वारा भी जैन समाज के सदस्य अपना रोष प्रकट कर रहे थे परन्तु बात नहीं बन रही थी। जयपुर में मुनिश्री प्रमाणसागरजी महाराज ने नगर के दिगम्बर एवं श्वेताम्बर जैन समाज के प्रतिनिधियों से चर्चा कर जैन समाज को एकजुट कर सशक्त मौन रैली की रूपरेखा तैयार की। 24 तीर्थंकरों के प्रतीक स्वरूप 24 अगस्त को देशभर के अनेक शहरों में जैन समाज द्वारा अद्वितीय मौन रैली का सफल आयोजन हुआ जिससे प्रभावित होकर जैन समुदाय प्रत्येक वर्ष 24 अगस्त को 'जैन एकता दिवस' के रूप में मनाने का विचार कर रहा है। हमारा नैतिक कर्त्तव्य है कि हम एकता की इस मिसाल को जलाये रखें और आने वाली पीढ़ियों को भी इस मिशन में जोड़ने के लिए प्रेरित करते रहे तभी हम अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर पायेंगे। वर्तमान में संथारा संलेखना पर सुप्रीम कोर्ट द्वारा पूर्वस्थिति हेतु स्टे जारी किया जा चुका है। अपनी एकता को बनाये रख युवा पीढ़ी को साथ लेकर हर नगर में संगठन बनाना पड़ेगे जो धर्मरक्षा के साथ साथ आवश्यकता पड़ने पर समाजजनों की सहायता हेतु सदैव तत्पर रहे। तभी हमारे संगठन अपना पवित्र लक्ष्य प्राप्त कर सकेंगे। 24 अगस्त को रैली में शामिल समाज जनों की अनुमानित उपस्थिति रही – जयपुर 1 लाख ❋ इन्दौर 1.50 लाख ❋ दिल्ली 50 हजार ❋ ललितपुर 70 हजार ❋ रायपुर 25 हजार ❋ दुर्ग 8 हजार ❋ गुवाहाटी 35 हजार ❋ मुंबई 55 हजार ❋ कोटा 15 हजार ❋ सागर 25 हजार ❋ फिरोजाबाद 22 हजार ❋ पटना 9 हजार ❋ आगरा 25 हजार ❋ अलीगढ़ 5 हजार ❋ नागपुर 50 हजार ❋ लखनऊ 15 हजार ❋ झांसी 25 हजार ❋ ग्वालियर 25 हजार ❋ सूरत 75 हजार ❋ पूना 25 हजार ❋ जबलपुर 75 हजार ❋ भिंड 15 हजार ❋ कटनी 15 हजार ❋ भोपाल 50 हजार ❋ गुना 10 हजार ❋ अशोक नगर 10 हजार ❋ विदिशा 10 हजार ❋ उज्जैन 11 हजार ❋ औरंगाबाद 30 हजार ❋ अहमदाबाद 15 हजार ❋ अजमेर 25 हजार ❋ दाहोद 10 हजार।

बधाईयाँ

☞ इन्दौर। पाँडीचेरी में आयोजित ''अंडर 11 गर्ल्स चेस चैम्पियनशिप'' में समाज की प्रतिभावान बालिका नित्यता जैन ने पूरे भारत में पाँचवा स्थान प्राप्त किया है।

11 राउंड की इस स्पर्धा में उन्होंने 6 राउंड जीते, 4 ड्रॉ किये और केवल 1 राउंड हारकर कुल 8 अंक हासिल किये तथा इंटरनेशनल फिडे रेटिंग में 69 इको पॉइंट्स की वृद्धि की। यह उनका एवं मध्यप्रदेश बालिका वर्ग का राष्ट्रीय शतरंज में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था। इसके लिए उन्हें नगद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्राप्त हुए।

☞ नवोदय शिक्षा एवं समाज कल्याण समिति भोपाल द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय गणित ज्ञान प्रतियोगिता मे कक्षा 8वीं के छात्र हर्ष जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। जिसके फलस्वरूप हर्ष को नगद पुरुस्कार से सम्मानित किया गया। हर्ष जैन साधना–सुधीर जैन के सुपुत्र है। उल्लेखनीय है कि हर्ष जैन विगत दो वर्षो से इंटरनेशनल मैथ्स ओलम्पियाड में भाग लेकर गोल्ड मेडल प्राप्त कर चुके है। हर्ष जैन धार्मिक प्रतियोगिताओं में भाग लेकर भी पुरस्कृत किये जाते रहे है।

गोलालारीय दर्शन हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता है।

गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज विदिशा के चुनाव संपन्न

कन्छेदीलाल जैन, विदिशा । श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज विदिशा के द्विवार्षिक चुनाव श्री लल्लू लाला जैन एडवोकेट के मार्गदर्शन में संपन्न हुए । समाज के सात सदस्यों को निर्विरोध चुनाव हुआ – श्री अभय वैद्य, श्री नरेश जैन, श्री मुकेश जैन, श्री वीरेन्द्र जैन (वांसी), श्री जिनेश्वरदास जैन, श्री सुनील जैन ग्यारसपुर एवं श्री एस.के. सिंघई । तत्पश्चात दो सदस्यों को आप्शन के माध्यम से कार्यकारिणी में लिया गया – श्री के.के जैन, श्री नरेन्द्र जैन। बाद में श्री लल्लू लालाजी चुनाव अधिकारी की ही अध्यक्षता में सभी सदस्यों की सहमति से पदाधिकारियों का चुनाव किया गया ।

अध्यक्ष
श्री अभय वैद्य

उपाध्यक्ष
श्री एस.के. सिंघई

कोषाध्यक्ष
श्री वीरेन्द्र जैन (वांसी)

सचिव
श्री नरेश जैन

सहसचिव
श्री सुनील जैन ग्यारसपुर

सदस्य
मुकेश जैन

सदस्य
जिनेश्वरदास जैन

संरक्षक
के.के. जैन

संरक्षक
नरेन्द्र जैन

ललितपुर गोलालारीय समाज की टेलीफोन व मोबाईल पत्रिका विमोचन समारोह संपन्न ।

राकेश जैन डब्ल्यू, ललितपुर । श्री दि. जैन गोलालारीय समाज (रजि) ललितपुर द्वारा श्री दि. जैन बड़ा मंदिरजी के परिसर में टेलीफोन एवं मोबाईल पत्रिका विमोचन समारोह संपन्न हुआ । पत्रिका में पहली बार ललितपुर शहर के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों के साधर्मीजनों की जानकारी भी प्रकाशित की गयी । कमेटी सदस्यों द्वारा घर घर जाकर परिवारों से उनके टेलीफोन व मोबाईल नंबर संग्रहित कर पुस्तिका का प्रकाशन कराया गया। दिनांक 26.07.15 को एक भव्य समारोह का आयोजन करके पत्रिका समाज को समर्पित की गई । विमोचन कार्यमक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में सेठ चम्पालालजी नौहरकला, नेमीचंदजी देवरान, वरिष्ठ अधिवक्ता व पूर्व पार्षद प्रकाशचंदजी तथा भूपेन्द्रजी सिद्धि समूह ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई । कार्यक्रम की शुरुआत भगवान महावीर स्वामी के चित्र अनावरण से की गई इसके बाद चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित किया गया। सभी ने वीर वंदना का गायन किया। कार्यक्रम में कमेटी द्वारा विधवा व असहाय महिलाओं तथा मेधावी छात्रों को दी जाने वाली राशि के वर्ष 2014–15 के दानदातारों सर्वश्री प्रकाशचंद एडवोकेट, अशोकजी स्टेट बैंक, शीलचंदजी दिगौड़ा, पूरनचंदजी ननौरा, वीरेन्द्रजी, कैलाशजी वर्णी कालेज, राजेन्द्रजी कैलवारा, डॉ. संजयजी राख, विनोदजी किसलवाल, राजेशजी राख, महेन्द्रजी छिपाई, सुदर्शनजी व्या, निहालचंदजी बिरधा, श्रेयांशजी सेरवास, विनोदजी व्या, राजकुमारजी एडवोकेट, प्रशांतजी महरौनी, अतुल आशीष गाँधी, कैलाशचंदजी देवरान व श्रीमती किरन दीदी को तिलक माल्यार्पण कर तथा नारियल व प्रशस्ति पत्र भेंटकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथियों सहित महेन्द्रजी चूना, डॉ. हुकुमचंदजी पवैया, अरविन्दजी एलआयसी, अभयजी जमादार, रमेशजी राखपंचमपुर आदि ने अपने विचार प्रकट किये । सभी ने कमेटी सदस्यों को पत्रिका विमोचन की बधाईयां दी तथा पत्रिका प्रकाशित कराने व कार्यक्रम की भूरि भूरि प्रशंसा की और पत्रिका की उपयोगिता पर प्रकाश डाला तत्पश्चात मुख्य अतिथियों के कर कमलों से पत्रिका का विमोचन किया गया। कमेटी द्वारा इस सुअवसर पर उपस्थितजनों पर मुँह मीठा कराया गया। अंत में मंत्री अनिल जैन नारियल ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन राकेशजी डब्ल्यू के द्वारा किया गया। कमेटी सदस्यों द्वारा समाज के प्रति परिवार को दो दो पत्रिका भेंट की गयी । स्वल्पाहार के पश्चात कार्यक्रम का समापन किया गया।

विदिशा में चातुर्मास की स्थापना

कन्छेदीलाल जैन, विदिशा । परम पूज्य संत शिरोमणि 108 आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभावक शिष्य 108 मुनिश्री प्रशांतसागर एवं मुनि श्री निर्वेगसागरजी की दि. 25.07.15 को कान्चेंट स्कूल के पास सकल दि. समाज द्वारा भव्य अगवानी की गई और जुलूस के रूप में अरिहंत बिहार मंदिर में विराजमान हुए। मुनिद्वय का चातुर्मास कलश स्थापना का कार्यक्रम दि. 2.08.15 को अरिहंत बिहार मंदिर में संपन्न हुआ। सर्वप्रथम आचार्य श्री की पूजन का भव्य आयोजन किया गया जिसमें स्थानीय श्रावकों के अतिरिक्त आस पास के क्षेत्रों से शताधिक श्रावकों ने उपस्थिति दर्ज कराई । मंगलाचरण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। मुनिद्वय को शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य श्री अशोक जैन सागर एवं श्री जिनेश जैन जे.के. स्टोन गंजबासौदा ने प्राप्त किया।

चातुर्मास कलश स्थापना के तीन कलशों की स्थापना की गई । प्रथम कलश का सौभाग्य श्रीमती मधुबाला माताश्री डॉ. आनंद जैन एवं अभय वैद्य ने प्राप्त किया । द्वितीय कलश का सौभाग्य श्री रमेशचंद आकाश कुमार जैन महक आफसेट ने प्राप्त किया। तृतीय कलश स्थापना का सौभाग्य श्री के.एल. जैन ठेकेदार ने प्राप्त किया । प्रात:काल श्री प्रशांतसागरजी द्वारा जिन सरस्वती की कक्षा, पश्चात 8.30 बजे से इष्टोपदेश शास्त्र पर प्रवचन, दोपहर 3.30 बजे श्री निर्वेगसागरजी द्वारा पुरुषार्थ सिद्धुपाय पर कक्षा ली जा रही है । शाम को 6.30 बजे आचार्य भक्ति के कार्यक्रम में श्रावकगण बढ़ चढ़कर भाग ले रहे है । सचमुच चातुर्मास में धर्म की गंगा बह रही है ।

सिद्धक्षेत्र पवाजी में अष्टान्हिका पर्व साआनंद संपन्न

रविन्द्र जैन, झाँसी । जैन धर्मावलम्बी दशलक्षण महापर्व के साथ ही अष्टान्हिका पर्व भी बड़ी धूमधाम से मनाते है जो साल में 3 बार 8 दिनों की होती है । इन दिनों में कहीं ना कहीं बड़े विधान आयोजित किये जाते है । दिनांक 24.07.15 से 31.07.15 को पड़ने वाली अष्टान्हिका पर्व के दौरान अतिशय क्षेत्र पवागिरी (ललितपुर) में पूरा विरधा निवासी श्री अशोककुमार जैन ने अपनी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती आशा जैन की स्मृति में सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन आदरणीय श्री धीरज भैय्या (राहतगढ़) के निर्देशन में कराया । विधान का शुभारंभ घटयात्रा के साथ हुआ । केशरिया वस्त्रों में सुसज्जित महिला एवं पुरुष जुलूस में गाजे बाजे के साथ कुएँ से पवित्र जल सुंदर घटों में भरकर धर्मध्वजा के साथ मनोरम दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे । पवित्र मंत्रोच्चारण के साथ धर्मध्वजारोहण के साथ महामंडल विधान का शुभारंभ हुआ । प्रतिदिन संगीतकार श्री कुलदीप जैन भोपाल द्वारा संगीतमय वातावरण में पूजन तथा पवित्र मंत्रोच्चारण के साथ विधान के अर्घ चढ़ाये गये ।

सायंकाल संगीतमय आरती का भव्य आयोजन जिसमें पुरुष एवं महिलाए नृत्य के साथ आरती करती रही । इसके बाद भैय्याजी ने मधुर वाणी में प्रवचनों से पधारे हुए धर्मानुनायियों का ज्ञानवर्धन किया तत्पश्चात विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन कर विजेताओं को पुरस्कृत किया गया । विधान के अंतिम दिन महाअर्घ की पूर्ण आहुति के पश्चात श्री अशोककुमार जैन ने विधान में पधारे हुए समाज के सभी सदस्यों व अपने नाते रिश्तेदारों और पावागिरी सिद्धक्षेत्र में विकास में सहयोग देने वाले महानुभावों का शाल, श्रीफल भेंट कर सम्मान किया गया ।

वीएचईएल निवासी श्री रवीन्द्र जैन ने सभी का आभार प्रदर्शन किया तथा इस महामंडल विधान के सफल आयोजन के लिए श्री अशोक कुमार जैन के परिवार को हार्दिक बधाईयां प्रेषित की ।

धन बरसाने वाले मास - चातुर्मास

चातुर्मास खुद को पढ़ने, समझने और अन्य प्राणियों को अभयदान देने का अवसर है यह सर्वविज्ञ है कि बारिश में बड़ी संख्या में सूक्ष्म जीव जंतु पैदा हो जाते है, अत: इस दौरान हम हर हिंसा से चाहे वह शारीरिक, मानसिक, वाचनिक और भावनात्मक हिंसा ही क्यों न हो, से बचने का प्रयास करते हैं।

इन दिनों कठिन व्रतों से लोग जीवन को मर्यादित और संयमित रखने का प्रयास करते है, चातुर्मास सैकड़ो जिज्ञासाओं को शांत करने का सुअवसर, स्वधर्म के कल्याण की अलख जगाते, जीव दया की ओर उन्मुख करते जिनवाणी से परिचित होने का काल, सम्यक ज्ञान दर्शन चास्त्रि की पाटी पढ़ाते ये मास कई धार्मिक शैक्षिक शिविरों के जन्मदात्री भी है । चातुर्मास का संयोग हमारी मन:स्थिति में भरे विभिन्न प्रदूषणों को समाप्त करने के साथ ही दुष्प्रवृत्तियों को सत्य वृत्तियों में बदलने का कार्य करता है। इन दिनों अपने द्वारा की गई भूलों को सुधार, जीवन को मोक्ष प्राप्ति की ओर ले जाने का प्रयास करते है ।

जैन शास्त्रों में आषाढ़ी चौमासा का विशेष उल्लेख है। व्यवहार में भी इसी को चौमासा के रूप में ख्याति मिली है । चौमासे का महत्व आध्यात्मिक जगत के साथ ही साथ लौकिक जगत में भी है, पानी की वृद्धि यानि लौकिक समृद्धि का आधार ।

यह तो सर्वविदित है कि साधुओं का विशेषतर जैन साधुओं का कोई स्थाई ठोर ठिकाना नहीं होता। वह जन कल्याण और समाज कल्याण की भावना संजोये वर्ष भर एक जगह से दूसरी जगह पैदल भ्रमण करते हुए श्रावक श्राविका को धर्म, अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य का विशेष ज्ञान देते है। चातुर्मास का समय आध्यात्मिक क्षेत्र में लगातार नई ऊँचाईयों को छूने हेतु प्रेरित करने के लिए है। अध्यात्म जीवन विकास की वह पगडण्डी है जिस पर बढ़कर हम अपने आत्मस्वरूप को पहचानने की चेष्टा कर सकते है।

शरीर अंतरात्मा का सुंदर मंदिर है। जब शरीर के साथ हमारे भाव और विचार अच्छे हो जाये तो यह जीवन सार्थक बन जाता है । चातुर्मास में एक एक क्षण का उपयोग ध्यान, उपासना, आराधना और साधना में होना चाहिए ।

ताकि साल भर में जो ऊर्जा क्षरित होती है उसका पुर्नभरण हो सके और आने वाले आठ माहों के लिए हम जगत के लिए कुछ दे पाने की स्थिति में आ सके ।

भावन्तों ने चातुर्मास काल में जिनवाणी द्वारा जीने की कला से विश्व को अवगत कराया । हमारे और प्रभु के बीच सीधे संबंध जोड़ने की तीव्र इच्छा के साथ रमने में ही चातुर्मास की सार्थकता है । इसमें लोक की बजाय ईश्वरीय आलोक से सीधा संबंध स्थापित करने का भरपूर प्रयास होना चाहिए । जो एकांत सेवन करते है वह अपनी आत्मा रुपी परमात्मा के अधिक निकट होते है मूलत: चातुर्मास ईश्वरत्व को पाने का यह समय है जिसमें किसी संसारिक कामना से कोई संबंध नही, इसी कारण चातुर्मास में दूसरे सभी मंगल कार्य वर्जित होते है, लेकिन **आज के चातुर्मास सुवर्ण वृष्टि मास बनकर रह गये है** – आज के चातुर्मास की स्थापना और चौमासा आश्चर्यचकित करते है । कलश स्थापना के समय ऐसा लगता है जैसे कुबेर का खजाना ही खुल गया हो, सभी जगह यह चर्चा होती है कि अमूक महाराजजी के चौमासा में इतने करोड़ की बोली ली गई। हजारो लोगों के सामने अपनी समृद्धि का प्रदर्शन बढ़ चढ़कर होता है लेकिन कभी कभी उस राशि के वसूलने के लिए आयोजकों को दांतो पसीना आ जाता है, करोड़ो रुपये कहां से आते है और उनका कहां कहां उपयोग और कितना सार्थक उपयोग होता है यह भी सोचने का प्रश्न है ? हम समाज के लोग भी एक ही व्रत को धारण करने वालो के साथ भिन्न भिन्न व्यवहार करते है : जिन साधुओं के साथ जनसैलाब नहीं, प्रवचन की कला नहीं, अपनी ओर आकर्षित करने का हुनर नहीं उनके चातुर्मास स्थापना में नारियल भेंट करने वालों का भी टोटा रहता है ।

चातुर्मास के दौरान बैण्ड बाजों की धुन, ढोल नगाड़ों का शोर, अनुष्ठानों की भरमार, धर्म एवं विभिन्न प्रकार के सामूहिक आयोजनों में बेशुमार खर्चे चातुर्मास की मूल भावना और उसके लक्ष्य को ही समाप्त कर रहा है । दुनिया जहान के शोर गुल से दूर इन चार माहों की पूरी तरह ईश्वरीय निष्काम साधना में समर्पित कर देने के लिए ही हमारे ऋषि मुनियों आचार्यों ने चातुर्मास का विधान किया है लेकिन इन महिनों में और भी बुरा हाल है । माईक, टेंट, फूल से लेकर सभी प्रकार के इंतजामों से जुड़े धंधे वालों के लिए यह स्वर्णिम समय होता है जितने अधिक और बड़े आयोजन उतनी ही अधिक कमाई ।

चातुर्मास के नाम पर श्रद्धालुओं को भुनाना और भी आसान हो गया है । भुनाने वालों को ना तो ईश्वर की परवाह न परम्पराओं की, धर्म से कुछ लेना देना नहीं, सभी चाहते है कि हर क्षण को कैसे अपने हित में भुनाया जाय और मैं समाज का सबसे बड़ा दानवीर और कर्णधार बन जाऊं ।

आज से वर्षों पहले नजर डाले जैन धर्म में किसी तरह का कोई आडम्बर नहीं था, हम वीतरागता में सबके आगे होते हुए भी अब सबसे बड़े रागी बने जा रहे है । हम अपने महाराजों, आचार्यों, ब्रह्मचारियों को भी इनमें उलझाते जा रहे है जिससे उनको आत्मकल्याण में बाधा हो रही है ।

हम सभी को आज चातुर्मास के उद्देश्य लक्ष्य, महत्व को समझने की जरुरत है । चातुर्मास एकांत का स्वर्णिम काल है । जन से जैन बनने का प्रयास है चातुर्मास ।

– साधना जैन, गौतम नगर, भोपाल

संपादकीय

सूरत बदलनी चाहिए

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
सारी कोशिश है कि सूरत बदलनी चाहिए ।
मेरे सीने में नहीं तो, तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए ।।

कवि दुष्यंत की इन अमर पंक्तियों ने देश के जनमानस को जहां अपने अधिकारों के प्रति जागरुक कर जोश व नई शक्ति भरी है वही उन्हें अपने कर्तव्यों को निभाकर अपनी समाज को उन्नत बनाने का संकल्प भी करना चाहिए । युवा वर्ग को हमारी संस्कृति व अपने समाज से जोड़ने के लिए हमें मिल जुलकर प्रयास करना होंगे । आधुनिकता की अंधी दौड़ में कहीं हमारे बच्चे अपना कुल, गोत्र व समाज का नाम ही ना भूल जाये ।

सशक्त देश का निर्माण सशक्त समाज से होता है और स्वाभिमानी कुटुम्ब व परिवार ही सशक्त समाज का निर्माण कर पाते है। आज के परिवेश में जब हम सर्वप्रथम अपने परिवार व कुटुम्ब के लिए सोचते हैं उसके पश्चात समाज व देश का विचार करते है ठीक उसी तरह जब हम समाज या संगठन की बात करे तो हमें सर्वप्रथम अपनी मातृसंस्था गोलालारीय समाज के हितों के बारे में सोचना चाहिए आज हम किस स्थिति में है, और क्यों है यह आपसे और हमसे छुपा नहीं है ।

हमने अपने समाज व समाजजनों की उपेक्षा कर अपनी मातृसंस्था (गोलालारीय समाज) को बहुत नुकसान पहुंचाया है । ना जाने क्यों अपनी मातृ संस्था के लिए हमारे मन और मुट्ठियां कम क्यों खुलती है ? अन्य संस्थानों में अपने को गौरवांवित करने के लिए क्षमता से अधिक सहयोग देने की प्रवृति कई समाजजन आज भी कर रहे है। हमें अब विचार करना चाहिए कि क्या ऐसा कर हम अपने समाज के साथ न्याय कर रहे है ?

यह तो वही बात हुई कि अपने परिवार को भूखा रखकर हम पड़ोसी को मिठाई खिला रहे हैं ।

सशक्त समाज के निर्माण के लिये श्रेष्ठीजनों के साथ साथ उन सदस्यों को अवश्य ही मौका मिलना चाहिये जिनके हृदय में समाज के लिए कुछ करने का जज़्बा है उन्हें प्रेरित करें, उन्हें मार्गदर्शन देवे उन्हें वे साधन सुविधाएँ उपलब्ध करावे जिसके आधार पर संगठन को बल मिल सके । क्योंकि जिन संस्थाओं में व्यक्ति सिर्फ पद व नाम के लिये जुड़ते है वे संस्थाएँ ज्यादा दिनों तक जिंदा नहीं रह पाती है और जिन संस्थाओं में मित्रता व रिश्तों के आधार पर सदस्यों का चयन होता है उनका आधार सदैव कमजोर रहता है। वे आज के इस दौर में संघर्ष नहीं कर पाने के कारण पिछड़ जाते है ।

अपनी समाज व संगठन को मजबूत करने का यह अर्थ कदापि नहीं लगाना चाहिए कि हम समग्र जैन समाज या समाज के अन्य वर्गों से अलग थलग होकर अलगाव वाद का समर्थन करें । इससे तो अल्पसंख्यक जैन समाज छिन्न भिन्न होकर बिखर जायेगा। सर्वप्रथम हम जैन है और जैन समाज के सभी वर्गों के साथ साथ चलकर स्वयं को भी मजबूत और उन्नत बनाना हमारा उद्देश्य है। इसके लिये हमें जागरूकता, वैचारिक एकता, समर्पण भाव एवं आगे बढ़ने की दृढ़ इच्छाशक्ति विकसित करने की आवश्यकता है । हमारे बालकों और युवाओं में समाज के प्रति गर्व और स्वाभिमान उत्पन्न करना आज प्रत्येक माता पिता का कर्तव्य बन जाना चाहिए ।

हमें गर्व है विदिशा गोलालारीय समाज पर जिन्होंने हमें स्वाभिमान का पाठ पुन: याद कराया अल्प अवधि में ही नींव से लेकर शिखर तक सिर्फ समाजजनों के सहयोग से भव्य मंदिर का निर्माण कर अपनी समाज का मान बढ़ाया । समाज कार्यों के लिए एक बीघा जमीन खरीद कर इन्दौर गोलालारीय समाज ने भी अभूतपूर्व कार्य किया है । जबलपुर समाज परिचय सम्मेलन के माध्यम से बहुत महत्वपूर्ण जिम्मेदारी का निर्वाह कर रही है । इसी तरह अहमदाबाद के युवाओं ने बड़ी मेहनत से गोलालारीय समाज को आज के नवीन संचार माध्यम इंटरनेट से जोड़ने का सफल अभियान चलाया है । हमें अपने पूर्वाग्रह को छोड़कर समाज उत्थान के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए, जहां तक हो सके अपने समाज संगठन को वैचारिक एवं आर्थिक सहयोग प्रदान करते रहे ताकि संगठन में क्रियाशीलता बनी रहे ।

त्याग करो पुण्य कमाओ

आज के युग में व्यक्ति के पास समय नहीं है धर्मलाभ लेने का, पुण्य कमाने का। अत: चातुर्मास के इन चार माह में हम वर्ष भर किये गये कार्यों के लिए ईश्वर से क्षमायाचना करते है और आने वाले समय के लिए पुण्य कमा लेते है; वो भी त्याग करके। धर्म की दृष्टि से चातुर्मास में ही ये त्याग बताये गये है क्योंकि नया पानी और कीड़े मकोड़ों से जीव हिंसा का बंध होता है अत: हिंसा से बचने के लिए इन 4 माह में ज्यादा से ज्यादा त्याग करना चाहिए। विशेषकर सावन और भादो में तो करना ही चाहिए। हम पुण्य कमाने के लिए चातुर्मास में इन नियमों को अपनी दैनिकचर्या में शामिल करना चाहिए–

* देवदर्शन प्रतिदिन करना चाहिए। * जिनवाणी का वाचन एवं श्रवण करना चहिए। * सामायिक प्रति समय करना चाहिए। * उपवास, एकासन आदि करना चाहिए। * ज्ञान आराधना एवं तप करना चाहिए। * जमीकन्द का त्याग करना चाहिए। * हरी पत्तीदार सब्जियों का त्याग भी हो सके तो करना चाहिए। * रात्रि भोजन नहीं करना चाहिए। * थाली में झूठा नहीं छोड़ना चाहिए। * होटल आदि का खाना भी कम से कम 2 माह त्याग करना चाहिए। * संध्या के समय प्रतिक्रमण करना चाहिए। * देवगुरु एवं धर्म के प्रति आस्थावान रहे। * परिग्रह परिमाण का यथासंभव त्याग करना चाहिए।

इन सभी नियमों से अपने कर्मो की निर्जरा करके पुण्य कमाने का अवसर नहीं खोना चाहिए।

रात्रि भोजन का त्याग करना चाहिए। यह हमारे लिए नरक गति का मुख्य द्वार है। आपका जीवन सुखी और सफल बनाना है तो उसके लिए भगवान महावीर कहते है कि जीवन भर रात्रि भोजन का त्याग एवं जमीकन्द का त्याग करना चाहिए नहीं तो रात्रि भोजन एवं जमीकंद आदि के कुसंस्कार वाले अगले भव में जन्म धारण करने क फलस्वरुप अनेक कष्ट दुख और यातनाओं के भागी बनेंगे। यदि रात्रि भोजन एवं जमीकंद छोड़ने से इतने भंयकर दुखो को टाला जा सकता है तो क्यों हम पीछे रहे।

हम पक्षियों को देखे उन्हें किसी धर्म गुरु ने रात्रि भोजन त्याग नहीं कराया परन्तु कुदरती ही ये पशु पक्षी रात्रि भोजन का त्याग देते है रात्रि भोजन करने वाले मनुष्य के पास एक पक्षी जितनी भी समझ नहीं होती है।

हम सब यह जानते है कि सूर्य प्रकाश में जीवों की उत्पत्ति नहीं होती क्योंकि सूर्य का प्रकाश सूक्ष्म जीवों के लिए अवरोधक तत्व है और रात्रि में सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति अधिक मात्रा में होने से सूक्ष्म जीव जंतु भोजन में गिर सकते है और अन्जाने में जीव हिंसा का दोष लग सकता है। अत: हिंसा से बचने के लिए एवं स्वस्थ रहने के लिए रात्रि भोजन जहां तक हो नहीं करना चाहिए।

जीवन में छोटे छोटे त्याग करके हम हमारा और ना जाने कितने जीवों का कल्याण कर सकते है। महावीर प्रभु के बताये मार्ग पर चलकर हम मोक्षपुरी को ओर जल्दी से कदम बढ़ाये। अत: ज्यादा से ज्यादा त्याग करे और अधिक से अधिक पुण्य कमाओं, यही जीवन का सार है।

– डॉ. कीर्ति जैन, खरगोन

चातुर्मास स्थापन कब, कैसे और कहाँ ?

* डॉ. अनेकान्त जैन * साभार – जैन प्रचारक

जैन श्रमण का जीवन अहिंसा प्रधान होता है। अहिंसा महाव्रतधारी जैन मुनि अपनी चर्या से इतनी अधिक सतर्कता रखते हैं कि सूक्ष्म से सूक्ष्म जीवों के भी प्राणों का हनन उनके द्वारा या उनके निमित्त से न हो पाए। वर्षावास भी जैन मुनिचर्या का अनिवार्य और महत्वपूर्ण योग है। इसीलिए इसे वर्षायोग अथवा चातुर्मास कहा जाता है। श्रमणचर्या के दस स्थितिकल्पों में अंतिम पर्युषणा कल्प है। इसके अनुसार मुनि को वर्षाकाल के चार महीने भ्रमण का त्याग करके एक स्थान पर रहने का विधान है। श्रावण, भाद्रपद, आश्विन तथा कार्तिक ये चार माह वर्षा ऋतु के माने जाते हैं। वर्षाकाल में प्राय: भ्रमण या विहार के मार्ग रुक जाते हैं, नदी नाले उमड़ पड़ते हैं। घास फूस आदि अनेक वनस्पतियां अधिक होने लगती हैं तथा मार्गों में फैल जाती हैं। सूक्ष्म स्थूल, छोटे–बड़े जीव जंतु उत्पन्न हो जाते हैं। अत: किसी भी जीव की विराधना और आत्मविराधना (घात) से बचने के लिए जैन धर्म में चार माह तक एक जगह रहने का विधान किया गया है। यह समय एक स्थान पर स्थिर रहने का सबसे उत्कृष्ट समय होता है। मुनि और गृहस्थ दोनों के लिए इस चातुर्मास का धार्मिक तथा अध्यात्मिक विकास की दृष्टि से महत्व है। इसीलिए गृहस्थ मुनिराजों के चातुर्मास को उसी प्रकार प्रिय तथा हितकारी महसूस करते हैं, जिस प्रकार चकवा चंद्रोदय को, कमल सूर्य को और मयूर मेघोदय को।

वर्षायोग धारण करने की विधि – अनगार धर्मामृत नामक मुनिचर्या के ग्रंथ में चातुर्मास स्थापना की विधि का उल्लेख विस्तार से किया गया है। उसके अनुसार आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी की रात्रि के प्रथम प्रहर में चारो दिशाओं में प्रदक्षिणा क्रम से लघु चैत्य भक्ति चार बार पढ़कर सिद्धभक्ति, योगभक्ति, पञ्चगुरुभक्ति और शांतिभक्ति करते हुए आचार्य आदि साधुओं को वर्षायोग ग्रहण करना चाहिए।

कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि के पिछले प्रहर में इसी विधि से वर्षा योग को छोड़ना चाहिए। वर्षा योग के अलावा हेमंत आदि ऋतुओं में अर्थात ऋतुबद्ध काल में श्रमणों का एक स्थान में एक मास तक रुकने का विधान है। जहां चातुर्मास करना अभिष्ट हो वहां आषाढ़ मास में वर्षावास के स्थान पर पहुंच जाना चाहिए तथा मार्गशीर्ष महीना बीतने पर वर्षायोग के स्थान को छोड़ देना चाहिए। कितना ही प्रयोजन होने पर भी वर्षायोग के स्थान में श्रावण कृष्ण चतुर्थी तक अवश्य पहुंच जाना चाहिए। इस तिथि का उल्लंघन नही करना चाहिए। कितना भी जरूरी हो फिर भी कार्तिक शुक्ल पंचमी तक वर्षायोग के स्थान से अन्य स्थान को नहीं जाना चाहिए। यदि किसी दुर्निवार उपसर्ग, विपत्ति आदि के कारण वर्षायोग के उक्त प्रयोग में अतिक्रम करना पड़े तो साधु को प्रायश्चित लेना चाहिए।

आषाढ़ शुक्ल दशमी से चातुर्मास करने वाले कार्तिक की पूर्णमासी के बाद तीस दिन तक आगे भी सकारण एक स्थान पर ठहर सकते हैं; किन्तु विशेष परिस्थितिवश, यथा वर्षा की बहुत अधिकता हो, मार्ग अवरुद्ध हो गए हों, अच्छा शास्त्राभ्यास या वाचना चल रही हो, शक्ति का अभाव हो अथा किसी अन्य रोगी साधक की वैयावृत्ति करनी हो। जैन अनुयायियों की यह तीव्र मनोकामना होती है कि मुनिराजों, आर्यिकाओं, साधु साध्वियों का चातुर्मास उनके नगर में हो। उसका कारण यह है कि चातुर्मास स्थापना से पूरा वातावरण आध्यात्मिक हो जाता है। प्रतिदिन आध्यात्मिक प्रवचनों तथा शास्त्रों की विशेष कक्षाओं से ज्ञान और संस्कार की वृद्धि भी होती है। तरह तरह के धार्मिक अनुष्ठान भी प्रारंभ हो जाते हैं, जिससे लोगों को धर्म लाभ होता है। इसके लिए लोग महीनों पहले से देश में जहां कहीं भी मुनिराज हों उनसे अपने नगर में पधारने तथा चातुर्मास स्थापना करने हेतु निवेदन करने पहुंच जाते हैं। कई कई स्थानों से लोग बहुत बहुत संख्या में आते हैं किन्तु मुनिराज अपनी मर्यादा और संयम साधना के अनुकूल स्थान का ही चयन करते हैं और बहुत विचारपूर्वक ही सही स्थान का चुनाव कर उस स्थान पर चातुर्मास स्थापना हेतु गमन कर जाते हैं।

वर्षायोग धारण कर लेने पर भी आपातकाल जैसी स्थिति होने पर देशान्तर गमन करने का भी शास्त्रों में विधान है, किन्तु वह अपवाद स्वरूप ही है। जैसे दुर्भिक्ष पड़ जाए, कोई महामारी फैल जाए, गांव अथवा प्रदेश में किसी कारण से कोई उथल पुथल हो जाए तो मुनि देशांतर गमन कर सकते हैं क्योंकि ऐसी स्थिति में ऐसे स्थानों पर ठहरने से रत्नत्रय धर्म संयम धर्म की विराधना होने का भय रहता है। अत: आषाढ़ की पूर्णमासी बीतने के बाद प्रतिपदा आदि के दिन देशांतर गमन किया जा सकता है। वर्षावास के दौरान ही काफी व्रत उपवास, विधि–विधान के पर्व भी आते हैं। जैन परम्परा में देव, शास्त्र व गुरु के एक साथ दर्शन को बहुत अधिक सौभाग्य माना जाता है।

देव और शास्त्र तो जिनालय में सदैव मौजूद रहते है किन्तु यदि साक्षात् गुरु भी दर्शन को मिलने लग जाएं तो आध्यात्मिक चेतना और अधिक प्रखर हो उठती है और चातुर्मास में यह सौभाग्य कम से कम चार महीने तो मिल ही जाता है। इसलिए चातुर्मास का विशेष महत्व है।

आमंत्रण...

गोलालारीय समाज के कार्यरत या सेवानिवृत्त प्रशासनिक अधिकारी, डाक्टर, इंजीनियर, सीए / सीएस, प्रोफेसर, वकील, धर्माचार्य, विख्यात कंपनियों के अधिकृत व्यापारीगण, बैंक व अन्य विभागों में कार्यरत देश–विदेश के अधिकारियों की जानकारी संपूर्ण विवरण के साथ **29 नवम्बर 2015** तक अवश्य भेजें।

आप स्वयं या अपने रिश्तेदार और परिचितों का निम्न जानकारियों के साथ – सदस्य का नाम, पत्र व्यवहार का पता, जीवन परिचय, संबंधित क्षेत्र में कार्य विवरण व वार्षिक आय के साथ पासपोर्ट साइज का तात्कालिक फोटो पत्रिका कार्यालय 64, न्यू देवास रोड, या राजेन्द्रकुमार जैन 16, महारानी रोड, इन्दौर पर भेजे। प्राप्त जानकारियों के आधार पर निकट भविष्य में पुस्तक प्रकाशन व सम्मान समारोह कार्यक्रम की रुपरेखा बनाई जा रही है।

विशाल जैन मूर्तियों में भारत की आत्मा

''विशाल मूर्ति निर्माण परम्परा एवं मांगीतुंगी के ऋषभदेव'' शीर्षक संगोष्ठी को संबोधित करते हुए प्रसिद्ध इतिहासज्ञ प्रो. जे.सी. उपाध्याय ने कहा कि मूर्ति निर्माण परम्परा के अवशेष सिन्धु घाटी सभ्यता में भी प्राप्त होते हैं ।मूर्तियों के निर्माण के ऐतिहासिक साक्ष्य 2000 वर्ष से अधिक प्राचीन हैं। यूनानियों के आगमन के बाद इनकी निर्माण शैली में महत्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए। विशाल जैन मूर्तियों की मुखाकृतियों में भारत की आत्मा के दर्शन होते हैं, क्योंकि ये साम्प्रदायिक सौहार्द्र, सत्य और अहिंसा का संदेश देती है ।

संगोष्ठी के प्रस्ताविक वक्तव्य में डॉ. अनुपम जैन ने दुनिया में बनी विशाल मूर्तियों की चर्चा करते हुए बताया कि चीन, जापान, रशिया, अमेरिका सभी जगह की मूर्तियां सीमेंट कांक्रीट से बनी हैं। अफगानिस्तान में बनी मूर्तियाँ उकेरी हुई थीं। बावनगजा जी की मूर्ति भी उकेरी गई है किन्तु मांगी–तुंगी में गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से बनाई जा रही 108 फीट ऊँची मूर्ति अखण्ड पाषाण से निर्मित है एवं श्रवणबेलगोला के बाहुबली से लगभग दूनी ऊँची है ।

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ द्वारा 2.08.15 को आयोजित उक्त संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए श्री श्री सूरजमल बोबरा, निदेशक ज्ञानोदय फाउण्डेशन ने कहा कि पौराणिक संदर्भों की उपेक्षा नहीं की जाना चाहिए क्योंकि इनमें ऐतिहासिकता छिपी रहती हैं। विशाल मूर्तियों के क्रम में बावनगजा की मूर्ति एवं श्रवणबेलगोला की मूर्ति में कला की दृष्टि से बहुत अंतर है किन्तु दोनो श्रमण परम्परा के पुरुषार्थ को प्रतिबिंबित करती है ।

मांगीतुंगी के ऋषभदेव की विशाल मूर्ति जो गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से 20 वर्ष में बनकर तैयार हो रही है उसे विश्व के आश्चर्यों में सम्मिलित किया जाना चाहिये ।

डॉ. सुरेखा मिश्रा पुस्तकालयाध्यक्ष ने बताया कि भारत की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति की पहचान मूर्तिकला और चित्रकला से जानी जाती है । सम्राट भरत ने कैलाश पर्वत पर 72 जिनालयों का निर्माण करके रत्नों की प्रतिमायें विराजमान की अत: यह मानना होगा कि मानव सभ्यता के विकास के प्रारंभ में मूर्तियों का निर्माण प्रारंभ हो गया था।

युवा विद्वान डॉ. भरत शास्त्री ने बताया कि प्रतिष्ठा प्रदीप में लघु और विशाल मूर्ति की जानकारी प्राप्त होती है । आचार्य वसुनंदीजी ने भी मूर्तियों के बारे में बताया है। डॉ. सुशीला सालगिया ने कहा कि मिस्र में भी करीब 5000 वर्ष पुरानी मूर्तियाँ प्राप्त होती है । कार्यक्रम का शुभारम्भ श्रीमती उषा पाटनी के मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ आभार डॉ. अजितकुमारसिंह कासलीवाल ने माना । सशक्त संचालन संस्था के सचिव डॉ. अनुपम जैन ने किया ।

– डॉ. अनुपम जैन, इन्दौर

संलेखना या संथारा... पेज नं. 1 का शेष....

इस परम सत्य को पहचान लिया है और इसे पहचान कर वह मृत्यु को भी जीता है न कि आत्महत्या करता है । आत्महत्या तो कायरता है आत्महत्या करने वाला जीवन को भी मृत्यु के समान भोगता है । यह तो हुआ वैज्ञानिक पक्ष संलेखना एक पूर्णतः वैज्ञानिक प्रक्रिया है न कि अस्वाभाविक या अवैज्ञानिक ।

आईये हम दूसरे और पहलू पर नजर डालते है । भारत एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है । जहाँ कई धर्मो के अनुयायी रहते है और अपने अपने धर्मो के अनुसार व्रत, उपवास आदि को धारण करते है और ऐसा करने के दौरान यदि वह मरण को प्राप्त हो जाता है तो क्या उसे आत्महत्या कहकर दण्डित करते है यदि ऐसा करेंगे तो भारत से धर्म का नामो निशान मिट जायेगा । चारों तरफ अराजकता ही अराजकता फैल जायेगी । कोई भी नियम, संयम धारण नहीं करेगा सिर्फ पशुवत जीवन ही जीयेंगे ।

जिस धर्म में जिस दर्शन में भगवान महावीर का संदेश जियो और जीने दो, अहिंसा परमो धर्मः हो वहाँ आत्महत्या तो क्या दूसरे के दिल को दुखाने को भी हिंसा माना गया है । फिर वहाँ अपना या दूसरे के प्राणों के घात की बात भी कैसे की जा सकती है वह तो साक्षात महापाप महाहिंसा ही है। संथारा या संलेखना का लक्ष्य मृत्यु नहीं अपितु जीवन और मृत्यु से मुक्ति पाना है । जहाँ मनुष्य जन्म को पाना ही अत्यंत दुर्लभ माना है तो उसके घात करने की भावना भी मन में लाना इस दुर्लभतो को खो देना है किन्तु शरीर एक नौका है जो इस जीवन से पार लगाता है जब किनारा आ जाये तो उस नौका से उतरना भी आना चाहिये, नहीं तो किनारे पर भी आकर मनुष्य डूब जाता है । बस नौका से सावधानीपूर्वक उतरने की कला ही संलेखना है इसमें जीवन विरोधी तत्व नहीं, जीवन से पलायन नहीं, जीवन घाती नहीं अपितु मृत्यु को जीने की कला है । जो वो अज्ञानी व्यक्ति नहीं जान सकता जिसको लगता है कि संलेखना या संथारा आत्महत्या है । जैनी ही नहीं अपितु इतर जैन समाज में भी समता पूर्वक मरण करने की चाह होती है । भारत के एक गणमान्य व्यक्ति श्री विनोबा भावेजी ने भी 9 नवम्बर 1982 में संलेखनापूर्वक मरण किया जिसकी अनुशंसा तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने की । पहले तो उन्होंने विनोबाजी से प्रार्थना की कि अभी देश को आपके जैसे संत की जरुरत है आप आहार, पानी न छोड़े किन्तु विनोबाजी के उत्तर से वे निरुत्तर हो गयी और उनके इस कार्य की भूरि भूरि प्रशंसा की । विनोबाजी का उत्तर था 'अब मेरे और मेरे परमात्मा के बीच कोई नहीं आये मैंने इस शरीर को जीवन भर खूब भरण पोषण किया अब यात्रा पूर्ण हो चुकी है मुझे इस यात्रा में अब कोई अवरोध नहीं चाहिये'। जी हाँ परमात्मा से आत्मा के मिलन का एक ही साधन है संलेखना । जिसने एक बार संलेखना पूर्वक मरण कर लिया उसे 3–4 भव से ज्यादा इस संसार में भटकना नहीं पड़ता। जन्म मरण नहीं करना पड़ता । लेकिन यह बात वह अज्ञानी नहीं जान सकता जो ये समझता हो कि शरीर को भोजन पानी देते रहने से वह अमर बना रहेगा। जैसे वो इस संसार में अमर बेल खाकर आया है और उसका मरण कभी नहीं होगा । जिसका जन्म हुआ है उसका मरण तो अवश्यभावी है । बस उसको देखते हुए समतापूर्वक जो मरण कर लेता है वही इस भव से पार हो जाता है ।

संलेखना का अधिकारी हर कोई नहीं होता । कुछ विशेष परिस्थितियों में ही संलेखना धारण करने का अधिकार है आचार्य समन्तभद्रस्वामी ने रत्नकरण्डश्रावकाचार में कहा है – दुर्भिक्ष आने पर, उपसर्ग आने पर, बुढ़ापा आने पर एवं असाध्य रोग हो जाने पर जहाँ जीवन की संभावना न हो तब संलेखना धारण की जाती है । जिसमें न जीने की इच्छा होती है और न मरने की । मरने की इच्छा करना ही संलेखना का अतिचार कहा गया है फिर उसे आत्महत्या कैसे कह सकते है।

आत्महत्या तो विपरीत परिस्थिति आने पर आवेश में, क्रोध में , जीवन से हारकर हताशापूर्वक, कायरतापूर्वक जीवन से पलायन करने के उद्देश्य से की जाती है जो निश्चित ही महापाप है, कैसे कोई इस कुकृत्य को संलेखना के समकक्ष कह सकता है जबकि संलेखना पूर्णत: होश में, संयम पूर्वक, अपनी कषायो को कम करते हुए, उत्साहपूर्वक, वीरतापूर्वक, मनुष्य जीवन को सार्थकता प्रदान करने के उद्देश्य से धारण की जाती है जो कि निश्चित ही प्रशंसनीय है ।

संलेखना हर संत की अंतिम अभिलाषा है क्योंकि भव्य विशाल मंदिर बना लेने पर भी यदि उस पर कलशारोहण नहीं होता तो वह मंदिर अपूर्ण माना जाता है उसी प्रकार जिंदगी भर की साधना रुपी मंदिर में जब तक संलेखना रुपी कलशारोहण नहीं होता वह साधना अपूर्ण रह जाती है । जिस प्रकार अंतिम परीक्षा की पूरी तैयारी कर लेने पर भी परीक्षा में न बैठे तो उसका पढ़ना ही व्यर्थ है । बस संलेखना जिंदगी की पढ़ाई की अंतिम परीक्षा है जिसने यह परीक्षा अच्छे ढ़ंग से दे दी वही इसमें उत्तीर्ण होकर आगे बढ़ता है नहीं तो बार बार कई भवों तक उसे इसकी पढ़ाई करते रहना पड़ती है । अंत में मैं यही कहना चाहूंगी –

आत्महत्या नहीं आत्मसाधना है संलेखना

जीवन से पलायन नहीं, अंतिम लक्ष्य को पाना है संलेखना

जन्मोत्सव तो सब मनाते है पर मृत्यु को महोत्सव मनाना है संलेखना

– अर्चना जैन, सहसंपादिका

''प्रयास'' रिश्तों को जोड़ने का

इस वर्ष सिद्धक्षेत्र पवाजी के मेले में अ.भा. स्तर पर समग्र दिगम्बर जैन समाज के विवाह योग्य प्रत्याशियों की विस्तृत जानकारी वाली पुस्तिका प्रकाशित की जा रही है । इस भावना को मूर्तरूप देने के उद्देश्य से हमने हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधियों के सहयोग से प्रयास 'रिश्तों को जोड़ने का'' युवक युवती परिचय पुस्तिका के फार्म उपलब्ध कराये है । फार्म को भरने की अंतिम तिथि 20 अक्टूबर 2015 रखी गयी है। पुस्तिका का विमोचन पावागिरी के वार्षिक मेले में 29 नवम्बर 2015 को किया जायेगा । आपके नगर के मंदिरों में ''प्रयास'' रिश्तो को जोड़ने का के प्रविष्टी फार्म उपलब्ध करा दिए गये है । प्रविष्टि फार्म आप हमारी वेबसाईट www.golalariya.com पर से फार्म डाउनलोड कर सकते है एवं प्रविष्टि फार्म एवं बैंक में जमा राशि की रसीद की फोटोकॉपी हमें golalariya.darshan@gmail.com अथवा golalariya_darshan@yahoo.in पर भेज सकते है । यदि आपके नगर में प्रविष्टि फार्म उपलब्ध नहीं हो पा रहे हो तो आप निम्न नंबरों पर संपर्क कर सकते है – 9425903301, 9425958188, 9329524227, 9407453066 निम्न प्रकाशित फार्म की फोटोकॉपी भी स्वीकार की जावेगी । बैंक में राशि जमा करने की स्थिति में 200+50 (बैंक प्रभार) = 250 रु. जमा करें ।

मुनि आहार - वृत्ति परिसंख्यान तप

*** मुनिश्री प्रमाणसागरजी महाराज * साभार – जैन प्रचारक ***

मुनि आहार के लिए जो नियम होते हैं, जिसे विधि कहते हैं, यह वृत्ति परिसंख्यान है । इसका शास्त्रीय नाम है – अभिग्रह। भोजन आहार संबंधी अभिग्रह को ही वृत्ति परिसंख्यान कहते है। बहुत से लोग आहार देना चाहते हैं, चौके लगाते हैं। किसी व्यक्ति विशेष के प्रति आहारदाता के प्रति लगाव, आसक्ति न हो इसलिए यह वृत्ति परिसंख्यान का नियम लिया जाता है, कठिन से कठिनतम नियम मुनिगण लेते हैं । भगवान महावीर का चंदनबाला के यहां आहार दस माह के उपरांत हुआ था । आचार्य शांतिसागर महाराज ने भी ऐसे नियम लिये कि उन्हें छत्तीस दिनों के बाद आहार मिला। यह अलग अनुभव है ।

आहार मिले तो ठीक, न मिले तो ठीक यह आशा, आकांक्षा पर विजय का मार्ग है । वृत्ति परिसंख्यान में चार प्रकार की वृत्ति होती है। भोजन की वृत्ति, पात्र की वृति (नियम) होती हैं – आज अमुक प्रकार के दाता के यहां जायेगे वे इस प्रकार खड़ो हों तो आहार लेंगे अन्यथा नहीं, विधि मिल जाये तो ठीक, आज अमुक पात्र में आहार दिखाया गया तो ग्रहण करेंगे। आहार तो कर पात्र में ही लेना है लेकिन सोच लिया आज स्वर्ण थाल में आहार दिखाया गया तो ही ग्रहण करेंगे । स्वर्ण से कोई आसक्ति नहीं है लेकिन यह नियम भी अपनी पुण्य की परीक्षा और आशा पर जय के लिए होता है ।

एक बार हमने नियम लिया कि आज चांदी के पात्र में नहीं लेंगे, अस्वस्थता चल रही थी, साथ में एक ब्रह्मचारीजी थे, उन्होंने हमारे लिए औषधि चांदी की कटोरी में घोल रखी थी, चांदी के पात्र में नहीं लेना, चले आये, यह पात्र की वृत्ति है । आहार में इनते प्रकार की ही सामग्री लेंगे, यह भोजन की वृत्ति है। कभी कभी मुनि किसी श्रावक विशेष का नियम भी लेते हैं।

एक नगर में एक श्रावक प्रतिदिन चौका लगाते पर हमारी विधि नहीं मिल रही थी । उनकी बहुत श्रद्धा थी, पर आहार उनके यहां नहीं हो पा रहा था। एक दिन हमने नियम लिया कि आज उन्हीं के यहाँ जायेंगे, उनके यहां तक गये, पर वे नदारत, लौटकर मंदिर आ गये, बाद में पता चला वो बाहर चले गये थे । उनका यहां चौका ही नहीं लगा, यह वृत्ति परिसंख्यान का तप है ।

करणानुयोग के ग्रंथो में वास्तु-विद्या

वास्तु कला का आरम्भ वास्तु की प्राचीनता को प्रदर्शित करता है । वास्तु का प्रारंभ तो कर्मभूमि के प्रारंभ में प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ देवजी के उपदेशों से ही हो गया था। उन्होंने मानव की आजीविका के लिए जो षट्कर्मों का उपदेश दिया उनमें एक शिल्प कर्म भी है। इसी से हमें प्राचीन शिल्प कला के वैभव की जानकारी मिलती है। भरत चक्रवर्ती के 96 खण्ड के महल हुआ करते थे। 96 खण्ड के महले बनावट दिशायें स्थिति सभी कुछ वास्तु विषयक उच्चकोटि का ज्ञान का परिणाम था। आज हमारे पास वैसा ज्ञान नहीं है पर हमारा साहित्य, आगम के द्वारा हमे आज भी सही दिशा निर्देश मिल जाते है। जैसे कि भूमि का चयन करने के लिए प्राचीन जैन सिद्धांतों के अनुसार गज, कर्म, दैत्य, नाग, पृष्ठ भूमियों के भेद विभिन्न दिशाओं में चढ़ाव एवं उतार की अपेक्षा से लिया जाना चाहिए । जैन पुराणों तथा करणानुयोग के कई ग्रंथों में वास्तु विद्या और शिल्प शास्त्र पर विशद रूप से प्रकाश डाला गया है।

करणानुपयोग का प्राचीन किन्तु अनउपलब्ध ग्रंथ है । ''लोय विभाग'' जिसका संस्कृत रूपांतर ''लोक-विभाग'' के ही नाम से भूमि सिंह सूरि (लगभग 11वीं सदी) में किया था । उन्होंने लिखा है कि मूल ''लोक विभगा'' की रचना पल्लववंशी कांची नरेश सिंह वर्मा के शासनकाल में शक सवत् 380 (302 ई.) में मुनि सर्वनन्दी ने पाटलिंक नामक ग्राम में की थी, परन्तु यह ग्रंथ इससे भी पूर्व रहा प्रतीत होता है। क्योंकि ''लोय विभाग'' का उल्लेख ''तिलोयपण्णत्ती'' (176 ई.) में कई बार हुआ है । ''नियम सार'' की सत्रहवीं गाथा में संदर्भित ''लोय विभाग'' यही ग्रंथ माना जाए तो उसका रचनाकाल आचार्य कुन्द कुन्द (52 ई.पू. से 48 ई. तक) से पूर्व का मानना होगा ।

एक और अनुपलब्ध ग्रंथ है । ''ज्योतिष्करण्डुक'' जो कि सूर्य प्रज्ञाप्ति नामक प्राचीन ग्रंथ पर आधारित है । जिस पर आचार्य पादलिप्त सूरि (5वीं सदी) की 'प्रकरण' टीका तथा आचार्य मलयगिरि की टीका उपलब्ध है।

उपलब्ध ग्रंथों में सर्वाधिक विस्तृत और सूचना प्रधान ग्रंथ है आचार्य यतिवृषभ का ''तिलोयपण्णत्ती'' जिसका अनुसरण अनेक आचार्यो ने किया है । उसमें अनेक नगरियों के विस्तृत विवरण है । आवास गृह, जलाशय, बाजार, परकोटा, प्रवेशद्वार, राजभवन गुफा, स्तूप, मंदिर, मानस्तंभ, मेरु आदि की लंबाई-चौड़ाई, ऊंचाई गहराई, नाप जोख आदि के विषय में विस्तार से चर्चा की गयी है । तीर्थंकर के समवशरण का वर्णन तो और भी विस्तार से किया गया है जो कि वास्तु कला का सबसे उत्कृष्ट ज्ञान व उपयोग है । आचार्य नेमीचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती का त्रिलोकसागर (11वीं सदी) आचार्य पद्मनन्दि का ''जंबूद्वीपपण्णत्ती'' आदि ग्रंथ भी उल्लेखनीय है ।

इसके अतिरिक्त भी कुछ उल्लेखनीय ग्रंथ है । औपपातिक सूत्र, जीवा जीवाभगव ''सूर्यप्रज्ञाप्ति जम्बूद्वीपप्रज्ञाप्ति चन्द्रप्रज्ञाप्ति, जिनमद्र गणी का ''क्षेत्र समास'' और संग्रहणी' बृहत क्षेत्र समास त्रैलोक्य – दीपिका चन्द्रसूरी (12वीं सदी) द्वारा संकलित ''बृहत संग्रहवी प्रद्युम्न सूरि (13वीं सदी) का ''विचारसार-प्रकरण'' रत्न-शेखर सूरि (14वीं सदी) का ''धधुक्षेत्र समास सोमतिलक सूरि (14वीं सदी) का बृहत-क्षेत्र समास आदि ।

स्वतंत्र रूप से हमें केाई ग्रंथ नहीं मिलता पर प्रतिष्ठा ग्रंथ के एक अंश के रूप में या फिर वास्तु विद्या और मूर्ति कला पर संयुक्त ग्रंथ के रूप में लगभग तेरहवी सदी से वास्तु कला पर लिखित रूप मिलता है । 1228ई. में लिखे गये पं. आशाघटजी का ''प्रतिष्ठा-सारोद्धार'' में हमें मूर्ति-प्रतिष्ठा के माध्यम से वास्तु विद्या का विधान मिलता है। इसी क्रम में ठक्कुर फेरूजी का वास्तु-विद्या पर स्वतंत्र और सांगोपांगरूप से वर्णन करने वाला एक मात्र प्रकाशित जैन ग्रंथ है । ''वत्थु सार-पयरण''। वास्तु विद्या पर पुराण-साहित्य का योगदान भी महत्वपूर्ण रहा है । जैसे जिन सेन आचार्य ने हरिवंशपुराण में वास्तु विषयक ज्ञान मिलता है । इसके अलावा आचार्य (10वीं सदी) का अपभ्रंश ''महापुराण'' आचार्य हेमचन्द्र सूरी (12वीं सदी) का प्राकृत ''तिसद्धिमहापुरिस-गुणालंकार'', आचार्य कल्प पंडित आशाधर (13वीं सदी) का ''त्रिषाष्टि श्लाकापुरूष चरित'' आदि-आदि ग्रंथो में हमें स्थापत्य कला (वास्तु कला) का विस्तृत वर्णन मिलता है । आचार्य उमास्वामी के नाम से प्रचलित एक श्रावकाचार ग्रंथ में भी लिखा है कि घर की किस दिशा में कौन सा कक्ष हो ।

''जैन वास्तु-विद्या'' लेखक डॉ. गोपीलाल ''अमर'' जी ने अपनी पुस्तक में जैन वास्तु विद्या का बढ़ा ही सुंदर सटीक वर्णन किया है ।

मुनिश्री 108 देवनन्दिजी महाराज ने ''वास्तु-चिन्तामणि'' नामक ग्रंथ लिखकर जैन समाज पर बड़ा ही उपकार किया है । इसी ग्रंथ का अध्ययन करने के बाद मेरे मन में ये जिज्ञासा जागी कि मैं भी जैन वास्तु विद्या पर शोध कार्य करूँ, उसी के परिणामस्वरुप ये तथ्य सामने आये कि गृह निर्माण वाला में कब कैसे, कहाँ, क्या बनना चाहिए इसका बड़ा रोचक व सही ज्ञान हमारे आचार्य हमें दे गये है । आवश्यकता है सिर्फ शोध कार्य की ।

– श्रीमती निधि जैन, 'तारबाबू' – जबलपुर

सूचना-

गोलालारीय दर्शन पत्रिका की ओर से प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र भेजे जाते रहे है जो क्षमावाणी के पूर्व आपको या आपके नगर में पत्रिका प्रतिनिधि तक पहुंचा दिये जावेंगे । हमारे आगामी अंक में आपके नगर में आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह के समाचार प्रमुखता से प्रकाशित किये जावेगे । अत: कार्यक्रम की जानकारी मय फोटो 15 अक्टूबर 2015 तक अवश्य भेंजे ।

इन्दौर गोलालारीय समाज की बहुआयामी पारिवारिक पुस्तिका 'प्रयास' के प्रकाशन का कार्य प्रगति पर है । इस पुस्तिका में मालवा एवं निमाड़ क्षेत्र में निवासरत गोलालारीय परिवार की जानकारी प्रकाशित की जाना है । इन्दौर के बाहर (मालवा एवं निमाड़ क्षेत्र) के जिन परिवारों ने जनगणना फार्म जमा नहीं कराये है वे 20 अक्टूबर तक अपने फार्म जमा करावें एवं जिन परिवारों को फार्म प्राप्त नहीं हुए है वे 9329524227, 9425903301, 9424013136 पर संपर्क कर फार्म प्राप्त कर सकते है । विशेष – नगर में अध्ययनरत/नौकरी/व्यवसाय कर रहे एकल व्यक्ति भी अपनी जानकारी अवश्य देवें । समाजजनों से सादर अनुरोध है कि वे इस सूचना की जानकारी शहर में आये नवीन परिवारों या शिक्षारत विद्यार्थियों को अवश्य देवें ।

1. 001
2. **गौरव सतीशकुमार जैन**
3. पंचरत्न/दिवाकीर्ति
4. 14.02.87
5. 13.10
6. इन्दौर
7. बी.एस.सी., पीजीपीएमआई
8. 5'3''/–
9. गोरा
10. सर्विस–एलआईसी, टीचिंग

11. 4.50 लाख
12. हाँ
13. हाँ
14. 184, जवाहर मार्ग मुकेरीपुरा, इन्दौर
15. 9827274456, 9926024501
16. satishgjain@gmail.com

1. 002
2. **अंकिता अजीतकुमार जैन**
3. वैद्य/पटवारी
4. 30.04.89
5. 09.00
6. इन्दौर
7. एम.कॉम
8. 5'1''/48 कि.ग्रा.
9. गेहुँआ
10. –

11. –
12. –
13. –
14. 13–बी, गुरुकृपा कालोनी एरोड्रम रोड़, इन्दौर
15. 9425907365
16. -

1. 003
2. **प्रतीक प्रदीपकुमार जैन**
3. फणीश/वैद्य
4. 28.07.91
5. 16.05
6. झाँसी
7. एम.बी.ए अध्ययनरत
8. 5'6''/–
9. गौरा
10. शा. सप्लायर्स

11. –
12. नहीं
13. नहीं
14. प्रदीप दूध भंडार 118, सदर बाजार, झाँसी
15. 0510–2470850, 9451130615
16. prateek.deeksha.jain@gmail.com

1. 004
2. **निर्देश संतोषकुमार जैन**
3. बिलौआ/भंडारी
4. 21.08.87
5. 15.40
6. जबलपुर
7. बी.कॉम., सी.ए.
8. 5'6''/–
9. गौरा
10. सर्विस – इंफोसिस

11. –
12. हाँ
13. –
14. 713/ए–1, इन्द्रलोक अपार्टमेंट गोलेबाजार, जबलपुर
15. 8055855909
16. nir.ca21@gmail.com

1. 005
2. **शुभांगी दिलीप जैन**
3. पवैया/चड्डार
4. 06.09.88
5. 21.14
6. विदिशा
7. एम.बी.ए., एम.एस.सी.
8. 5'3''/55 कि.ग्रा.
9. गोरा
10. –

11. –
12. हाँ
13. –
14. इंदिरा मार्केट, बाजार चौक डिण्डौरी
15. 9424360960, 8959706944
16. -

1. 006
2. **प्रतीक सुरेशचंद जैन**
3. सिंघई/गुलौआ
4. 02.10.84
5. 10.22
6. डिण्डौरी
7. बी.कॉम
8. 5'6''
9. –
10. प्रिंटिंग प्रेस

11. 4.80 लाख
12. हाँ
13. –
14. डी.डी. मार्केट डिण्डौरी
15. 8989771643, 9407886143
16. -

शब्द जाल प्रतियोगिता-11

चातुर्मास विशेषांक में खेल पहेली में हमने प्रतिदिन करने वाली पूजा, स्तुति और विनतियों से कुछ पंक्तियाँ अपूर्ण रूप में लिखी गयी हैं, जिन्हें आपको पूरा करना है –उदाहरण के रूप में पहली पंक्ति इस प्रकार है –
जैसे मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव ।

1) मेरे अवगुन न चितारो, ... ।
2) धन घड़ी यों धन दिवस , ... ।
3) अहंकार का भाव न रक्खूँ, ... ।
4) ज्ञानदीप तप तेल भर, ... ।
5) यह भव समुद्र अपार तारण, ... ।
6) भये जब अष्टम वर्ष कुमार, ... ।
7) कहां कलंकी बंक चन्द्रमा, ... ।
8) सुरग नरक पशु गति में नाहीं, ... ।
9) पूजें जिन्हे मुकुट हार किरीट लाके, ... ।
10) भावों की निर्मल सरिता में, ... ।

प्रतियोगी का फोटो

प्रतियोगी का नाम _____

पता _____

_____

_____

मोबाइल नं. _____

निम्नलिखित पते पर भेजें – **'गोलालारीय दर्शन' 16, महारानी रोड, इन्दौर या 64, न्यू देवास रोड, इन्दौर** । प्राप्त सही प्रविष्टियों का ड्रा निकालकर प्रथम 5 विजेताओं को के नाम निकालकर आगामी अंक में उनके फोटो भी प्रकाशित किये जायेंगे ।

*** नियम** – प्रतियोगिता सभी आयु वर्ग महिला / पुरुष / बच्चों के लिए है। प्रविष्टि भेजने की **अंतिम तिथि 15 अक्टूबर 2015** सही जवाब के साथ प्रतियोगी परिवार प्रमुख का नाम, टेलीफोन नंबर एवं प्रत्याशी का नवीन फोटो लगाकर पूर्ण पता मय पिनकोड के साथ अवश्य भेजें। संपादक मंडल का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा। अपूर्ण जानकारी होने पर प्रविष्टी को निरस्त किया जा सकता है । प्रतियोगिता 11 के परिणाम आगामी अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

शब्दजाल प्रतियोगिता – 10 के सही उत्तर

1) पांव (पैर) 2) जान 3) जंग 4) सौर 5) लंका 6) भजन 7) सिर 8) ढोल 9) मीठा 10) दो

सही उत्तर भेजने वालों के नाम –

श्रीमती नितिमा जैन, इटारसी

श्रीमती साधना जैन विदिशा

कु. आयुषी जैन ललितपुर

हर्षकुमार जैन जखौरा

हर्ष जैन विदिशा

चेतावनी

आलस छोड़ो, निद्रा त्यागो,
हुआ सवेरा अब तुम जागो ।
बहिनो दिन के कार्य सम्हालो,
आलस मे मत समय बिताओं ।।
धर्म, कर्म की कथा वार्ता,
चारित्र सुन सतियो का,
निज को उसमें ही अपनाकर
निज चारित्र सुधारो ।।
अपने दुःख सम पर दुःख जानो
स्वानुभूति अपनाकर,
मैत्री भाव बनाकर सब में
खुद को आदर्श बनाओ ।।

– शशिप्रभा जैन, रावरपुरा, ललितपुर

समग्र दिगम्बर जैन समाज की विवाह योग्य परिचय पुस्तिका के फार्म www.golalariya.com पर से डाउन लोड कर सकते है । पूर्ण रुप से भरे प्रविष्टि फार्म एवं बैंक में जमा राशि की रसीद की फोटोकॉपी अनिवार्य रुप से संलग्न करें । फार्म निम्न ईमेल पर जमा रसीद की कॉपी के साथ golalariya.darshan@gmail.com **अथवा** golalariya_darshan@yahoo.in पर भेज सकते है । www.golalariya.com पर प्रविष्टि फार्म के साथ आपके नगर के क्षेत्रीय प्रतिनिधि की सूची भी इसी साइट पर उपलब्ध है जिससे आप फार्म प्राप्त कर सकते है । फार्म जमा करने की अंतिम **तिथि 20 अक्टूबर 2015 है ।** आप इस पुस्तिका में अपने व्यवसायिक संस्थान का विज्ञापन भी प्रकाशित कर सकते है । अधिक जानकारी के लिए आप श्री बाहुबली जैन 9425903301 एवं राजेन्द्र कुमार जैन 9406744064 पर संपर्क कर सकते है ।

इन्दौर में फार्म डाक से भेजने का पता –
श्री राजेन्द्रकुमार जैन, हीरालाल एण्ड संस
16 महारानी रोड़, इन्दौर (म.प्र)

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है, सम्पादक मण्डल का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है । किसी भी प्रकार का विवाद होने पर न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा ।

स्वामी श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास के लिए प्रकाशक, मुद्रक बाहुबली जैन द्वारा प्रकाशित प्रतीक्षा ग्राफिक्स127, देवी अहिल्या मार्ग इन्दौर से मुद्रित एवं ग्राफिक्स ज़ील कम्प्यूटर एंड ग्राफिक्स 356, तिलक नगर श्री गोलालारीय दि. जैन समाज न्यास, 64, न्यू देवास रोड़, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित